॥ विजयते श्रीबालकृष्णः प्रभुः ॥

पतित प्रायश्चित्त विवेचन

लेखक और प्रकाशक:—

अखिलानन्द शर्मा 'कविरत्न'

मिलने का पता—

अखिलानन्द शर्मा (कविरत्न)

मु० पो० अनूपशहर, जिला बुलन्दशहर यू० पी०।

प्रथमवार	विक्रम संवत	मूल्य
१०००	१९९०	।)

Printed by P. Vedanidhi Misra at the

V. N. PRESS ETAWAH.

॥ श्री हरिः ॥

॥ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

पतित-प्रायश्चित्त विवेचन।

—❀-()❀()-❀—

उपक्रम।

भगवत्कृपा से प्रेरित होकर, सनातनधर्म पर आये हुये वातावरण का प्रतिरोध करने के लिये जिस निबन्ध माला का हमने मुम्बई के मोटे मन्दिर में बैठ कर आरम्भ किया था। प्रस्तुत निबन्ध उसका सप्तम निबन्ध है। इसमें हम पतितों का प्रायश्चित विवेचन करेंगे। वर्तमान समय में सुधारकगण यवनोंको शुद्ध करके, हिन्दू बनाने लगे हैं। उनका यह कार्य सर्वथा गर्हित है। जन्मतः जो पतित है, उनकी शुद्धि किसी भी धर्म-शास्त्र में नहीं है। कर्मतः पतितों का कर्मतारतम्य से कर्मगत दोष की मात्रा देखकर प्रायश्चित्त हो सकता है। परन्तु उसमें जो शास्त्र की आज्ञा है उसकी अव-

हेलना करने पर प्रायश्चित्त नहीं होसकता है। प्रायश्चित्ताभाव में अधोगमन अनिवार्य है। इन्हीं बातों का इस निबन्ध में विवेचन रहेगा। जो महानुभाव पवित्रताका तारतम्य जानते हैं वे कृपया इस निबन्ध पर गहरी गवेषणा के साथ विचार करें, यही हमारा निबन्ध है।

प्रथम प्रश्न।

(प्रश्न) पाप किस को कहते हैं?

(उत्तर) "पातयतीति पातकम्" [धारयतीति धर्मः] जो अपने स्वरूपका धारण करावे वह धर्म है और जो अपने स्वरूपसे गिरावे, उसको पाप कहते हैं। विधि विहित कार्य करना धर्म है। विधि-विरुद्ध कार्य करना पाप है। विधि शब्द से यहां पर वेद का ग्रहण है।

द्वितीय प्रश्न।

(प्रश्न) मनुष्य पतित क्यों होता है?

(उत्तर) विहित कर्म के न करने से निन्दित कर्म के करने से तथा इन्द्रियों के न रोकने से मनुष्य पतित होता है ऐसा याज्ञवल्क्य स्मृति में लिखा है। मनुस्मृति के (११।४४) पद्य में भी इसी बात का समर्थन है।

तृतीय प्रश्न।

(प्रश्न) पाप कौन कराता है?

(उत्तर) भगवद्गीतामें [अथकेन प्रयुक्तोऽयम्] इस पद्य

के अन्दर अर्जुन का भी यही प्रश्न है। उसके उत्तरमें श्रीकृष्ण जी [काम एष क्रोध एष] यह पद्य कहते हैं। कामकी प्रेरणा से अथवा क्रोधकी प्रेरणासे मनुष्य पाप करता है। यह दोनों रजोगुण से उत्पन्न होते हैं। रजोगुण प्रकृति-निष्ठ है। प्रकृति ईश्वर निष्ठ है। स्वर्ग नरकादिकी आबादी भरने के लिये यह माया का चक्र चल रहा है। श्रुति कहती है:—

एष एव साधु कर्माणि कारयति।
यं यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषते ॥ १ ॥
एष एव असाधु कर्माणि कारयति।
यं यमेभ्यो लोकेभ्य अधोनिनीषते ॥२॥
अज्ञो जंतुरनीशोय-मात्मनः सुखदुःखयोः।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्वर्गं नरकमेव वा ॥३ ॥
न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं वर्धयितुमिच्छन्ति बुद्धया संयोजयंन्ति तम् ॥४॥

इनका अभिप्रायः स्पष्ट है, मनुष्यकी उन्नति और अवनति ईश्वराधीन है मनुष्य अल्पज्ञ है। सर्वज्ञ ईश्वरही इसको चला रहा है। उसीकी प्रेरणा से यह कुछ कर रहा है। दोनों तरफ उसीकी प्रेरणा है। मनुष्य बुद्धिमान् है। इसको बुद्धि पूर्वक काम करना चाहिये। [मूढ़ः पर प्रत्यय-नेय बुद्धिः (?) परेङ्गितज्ञानफलाहि बुद्धयः]

चतुर्थ प्रश्न।

(प्रश्न) पाप का फल कौन भुगाता है ?

(उत्तर) ईश्वर पाप का फल भुगवाता है। पाप में

मनुष्य की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। रजोगुणी और तमोगुणी प्रायः पाप परायण होते हैं। उनकी वासना उनको इस ओर प्रवृत्त करती है, वासना का उत्तम बनाना मनुष्याधीन है। उत्तम वासना से उत्तम कर्मों में प्रवृत्ति होकर उत्तम गति मनुष्य प्राप्त कर सकता है। इसीलिये और योनियों से मनुष्य योनि उत्तम मानी गई है। चोर चोरी को अपनी वासना से करता है, परन्तु उसको फल उसको राज नियन्त्रण से भोगना पड़ता है।

पंचम प्रश्न।

(प्रश्न) मनुष्य पाप से बच सकता है—या नहीं?

(उत्तर) अवश्य बच सकता है! परन्तु (१) बुद्धि पूर्वक काम करने से (२) सात्विक आहार और एकान्त सेवन स्वधर्मानुष्ठान, सत्संग, कथा श्रवण आदि अनेक उपाय पाप से बचने के लिये धर्मशास्त्रों में लिखे हैं। जो मनुष्य पाप से बचना चाहे, वह पापियों के साथ न बैठे। पाप कर्म में प्रवृत्त न हों। नीच जातिसे घृणा करें। जहां तक बन सके अमेध्य, अपेय, अस्पृश्य, अव्यवहार्य, पदार्थों से बचे। तीर्थाटन, हरि कथा श्रवण, उत्तम पुरुषों का सत्संग करे। ऐसा करने से, मनुष्य पाप से बच सकता है।

षष्ठ प्रश्न।

(प्रश्न) पाप क्षमा हो सकता है, या नहीं?

(उत्तर) हो सकता है, [परन्तु] सबका नहीं। सबका

यदि पाप क्षमा कर दिया जाय तो नरकों की आबादी ही बेकार होजाती है, सृष्टि चक्र का चलना बन्द होजाता है, इस कारण सब का पाप क्षमा नहीं किया जा सकता है। उत्कट पुण्य जिनका बलवान् होता है, उनका थोड़ासा पाप क्षमा किया जासकता है। भगवत्कृपा, इसमें भी कारण है, बिना भगवत्कृपा के मनुष्य का मन अच्छे मार्ग में प्रवृत्त नहीं हो सकता है [येषां त्वन्तगतं पापम्] इत्यादि पद्यों से भगवद्गीता में इसी बात का समर्थन है। बीमारी का जब अन्त आता है तब वैद्य का नाम हो जाता है। कर्मका फल जब समाप्त होने पर आता है, तब ईश्वर थोड़ा सा अपराध क्षमा कर देता है, ईश्वर की विशेष कृपा कारणापेक्ष है। सब पर ईश्वर विशेष कृपा नहीं कर सकता है।

सप्तम प्रश्न।

(प्रश्न) पाप कितने प्रकार का होता है?

(उत्तर) मनसा वाचा कर्मणा, पाप किया जाता है। इस कारण पाप तीन प्रकार का होता है। गुप्तागुप्त-भेद से वह छः प्रकार का हो जाता है। ज्ञाताज्ञात भेद से वह बारह प्रकार का हो जाता है। इसी प्रकार-इसके अनेक भेद हो जाते हैं।

(१) यदन्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्याम्।
(१) यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्याम्।
(१) यद्विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम्॥

इत्यादि श्रुतियों में इन बातों का वैज्ञानिक विवेचन विद्यमान् है। इसका विस्तार मनुस्मृति के द्वादशाध्याय में है। गुणत्रय विभागयोग-भगवद्गीता में-इसी का प्रपञ्च है। वेद में "तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु" यह प्रार्थना-कई मंत्रों में आती है, बन्धमोक्ष का कारण मन ही है। मन मनुष्यों को इस प्रकार चलाता है—जिस प्रकार सारथि घोड़ों को चलाता है। यजुर्वेद के—

सुसारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्।
नेनीयतेऽभीषुभिर्वाजिन-इव ॥

इस मंत्र में इसी बात का पल्लवन है। मन दो प्रकार का होता है। प्राकृतिक और अप्राकृतिक (?) छान्दोग्य में भुक्त का परिणाम "मन" माना है, ईश्वरीय मन "अमृत" है। इसी कारण [येनेदं······अमृतेन सर्वम्] ऐसा वेद कहता है, समस्त प्रपञ्च मन का है। मनुष्य को मन शुद्ध रखने का प्रयत्न करना चाहिये।

अष्टम प्रश्न।

(८) कितने जन्म तक पाप फल देता है?

(उत्तर)·········

महापातकजं चिह्नं सप्तजन्मानि जायते।
उपपापोद्भवं पंच त्रीणि पापसमुद्भवम् ।।१।।३
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु।
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः ।४।।१७३

इन दो पद्यों में पाप संक्रमण का वर्णन है। पहिला पद्य वृद्धशातातप का है, दूसरा मनु का है। महापातक का फल सात जन्म तक जाता है। उपपातक का फल पांच जन्म तक साथ जाता है, पाप का फल तीन जन्म तक साथ जाता है। अपने शरीर में, पुत्र के शरीर में, प्रपौत्र के शरीर में कर्म फल जाता है। यहां पर यह प्रश्न हो सकता है कि–"एक का कर्म दूसरे के लिये क्यों फलाफल का कारण होता है"?। इस प्रश्न का उत्तर हम श्रुति से देते हैं।

> तस्मात्पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुः। तस्मादेन-
> मनुशासति । स यदैवं विदस्मांल्लोकात्प्रेति।
> अथैभिरेव प्राणैः सह पुत्रमाविशति। सयद्य-
> नेन किंचिदक्ष्णया कृतं भवति। तस्मादेनं सर्व-
> स्मात्पुत्रो मुञ्चति। तस्मात्पुत्रोनाम। सपुत्रेणै
> वास्मिंल्लोके प्रतितिष्ठति। अथैनमन्ते देवाः
> प्राणा अमृता आविशन्ति ॥१४॥ ४ ॥ ३ ॥ २६

शतपथ ब्राह्मण की इस श्रुति में पिता के कर्मों का फल संक्रमण पुत्र में दिखाया गया है। पिता के पाप पुण्य का फलाधिकारी संतति वर्ग होता है, प्रत्यक्ष में क्षय, अपस्मार, भगंदर, अर्श, कुष्ठ, आदि रोग पिता से पुत्र में आजाते हैं। बाल्य में उनका अस्तित्व बीजवत् रहता है। तारुण्य में उनका उद्रेक हो जाता है, ज्यादा दान का अधिकारी पुत्र होता ही है। इसी श्रुति के आधार पर श्राद्ध तर्पणादि कार्य पुत्र करता है, जाति परिवर्तन का मसला भी यहां पर हल

होता है। सात जन्म के बाद, पाँच जन्म के बाद जो मन्वादि धर्मशास्त्र, जाति परिवर्तन मानते हैं, उसका मूल कारण यही है।

नवम प्रश्न।

(प्रश्न) पूर्व जन्म के पापों का क्या २ फल होता है ?

(उत्तर)·········

ब्रह्महा नरकस्यान्ते श्वेतकुष्ठी प्रजायते ॥ २ । १ ॥
कुष्ठी गोवधकारी स्यान्नरकान्तेस्य निष्कृतिः ॥ १२
पितृहा चेतना हीनो मातृहान्धः प्रजायते ॥ २० ॥
स्वसृघाती तु बधिरो नरकान्ते प्रजायते ॥ २६ ॥
मृतभार्याभिगमने मृतभार्यः प्रजायते ॥ ५ ॥ ३१ ॥
सगोत्रस्त्री प्रसंगेन जायते च भगन्दरः ॥ ३२ ॥
तपस्विनी प्रसंगेन प्रमेही जायते नरः ॥ ३३ ॥
गुरुजायाभिगमना-न्मूत्रकृच्छ्रः प्रजायते ॥ ५ ॥ ८ ॥
श्वश्रुतागमने चैव रक्तकुष्ठं प्रजायते ॥ १५ ॥
मातृगामी भवेद्यस्तु लिङ्गं तस्य विनश्यति ५ । १
शूकरे निहते चैव दंतुरो जायते नरः ॥ २ ॥ ४९ ॥
शुकशारिकयोर्हन्ता नरः स्खलितवाग्भवेत् ॥ ५४ ॥

इन पद्यों में पूर्व जन्म के पापों का फल बतलाया गया है, यह सब पद्य [वृद्ध शातातप स्मृति] के हैं। ब्रह्महत्या का फल (श्वेतकुष्ठ) गोहत्या का (कुष्ठ) पितृहत्या का फल (अपस्मार) मातृ हत्या का फल (अन्धा होना) बहिन की हत्या का फल (बहिरापन) विधवागमन का फल

(स्त्री नाश) सगोत्र स्त्री गमन से (भगन्दर) आचेयी के गमन से (प्रमेह) गुरु पत्नी गमन से (मूत्रकृच्छ्र) पुत्री गमन से (रक्तकुष्ठ) मातृ गमन से (नपुंसक) शूकर हत्या से (दंतुर) तोता और मैना के मारने से (हकला) होता है !। यह केवल निदर्शन मात्र है, बाकी धर्मशास्त्रों में देखना चाहिये ।

दशम प्रश्न ।

(प्रश्न) पतित कितने प्रकार के होते हैं ?

(उत्तर) पतित तीन प्रकार के होते हैं। जातितः १ कर्मतः २ उभयतः ३–, (उनमें) अस्पृश्य, अन्त्यज, अन्त्याव-सायी, अवरवर्ण, जन्मतः पतित हैं। कुष्ठादि रोग वाले कर्मतः पतित हैं। सूअर, कुत्ता, गदहा, कौआ, उभयतः पतित हैं। इस प्रश्न का विस्तृत विवेचन "निबन्ध माला" के छठवें निबन्ध में किया गया है।

निबन्ध का प्रायश्चित्त भाग.

प्रथम प्रश्न ।

(प्रश्न)—प्रायश्चित कौन दे सकता है ?

(उत्तर)·········

आलोच्य धर्मशास्त्राणि समेत्य ब्राह्मणैः सह ।
प्रायश्चित्तं द्विजो दद्यान्नस्वेच्छया न कदाचन १७।६७

स्नेहाद्वा यदि वा मोहाद्भयादज्ञानतोपि वा।
कुर्वन्त्यनुग्रहं ये तु तत्पापं तेषु गच्छति ॥१६८

इन दो पद्यों में प्रायश्चित्त देने वाले का निर्णय किया गया है। इनमें पहिला पद्य (शंख स्मृति) का है। दूसरा (शातातप) का है। समस्त धर्मशास्त्रों को देखकर अनेक ब्राह्मणों की सम्मतिसे विद्वान् ब्राह्मण प्रायश्चित्तकी व्यवस्था देसकता है, परन्तु धर्मशास्त्रों में जहां व्यवस्था "अनाम्नात हो वहां पर"? जहां धर्मशास्त्र स्वयं अपने मुख से व्यवस्था दे रहे हों, वहां पर व्यवस्था देने की कोई आवश्यकता नहीं है। [यह मत मनु० और याज्ञवल्क्य का है] १२।१०८ (मनु०) ३। २६४ (याज्ञवल्क्य स्मृति) स्नेह से, मोह से, भय से अज्ञानसे, जो प्रायश्चित देनेमें अनुग्रह (रिआयत) करते हैं उनको पातक करने वाले का पातक लग जाता है। यह (शातातप) का मत है। हमारे मतमें कोई पाप 'अनाम्नात' नहीं है। सब का प्रायश्चित्त धर्मशास्त्रों में लिखा है। उसमें काट छांट करने का किसी को अधिकार नहीं है। जो उसमें अपनी सम्मतिसे काट छाँट करते हैं। वे [बेज़ा मदाख़िलत] करते हैं।

द्वितीय प्रश्न।

(प्रश्न) प्रायश्चित्तमें अवस्था भेद रहता है वा नहीं?

(उत्तर) रहता है, क्यों कि—

अशीतिर्यस्य वर्षाणि बालो वाप्यून षोडशः।
प्रायश्चित्तार्द्धं मर्हन्ति स्त्रियो व्याधित एव च ॥१९

शातातप स्मृति के इस बचन में अस्सी वर्ष का वृद्ध, सोलह वर्ष की अवस्था से न्यून बालक, स्त्री और रोगी के लिये आधा प्रायश्चित्त देना लिखा है। देवल स्मृति का भी यही आदेश है। वृहद्विष्णु स्मृति, (३४ । ३३) लघुहारीत स्मृति (३) आंगिरस स्मृति (३३) वृहद्यमस्मृति (३।३) का भी यही मत है। पांच से ऊपर और ग्यारह से नीचे उमर के बालक का प्रायश्चित्त उसके सम्बन्धी कर सकते हैं, यह मत (वृहद्यमस्मृति ३ । १ । २) का है। आंगिरस स्मृति (३२) और लघुहारीत स्मृति (३४ । ३५) में भी यही आदेश है। गर्भाधान से पांच वर्ष तक के बालक को कोई पाप नहीं लगता है, यह मत लघुहारीत स्मृति का है।

तृतीय प्रश्न।

(प्रश्न) प्रायश्चित्त का प्रयोजन क्या है?

(उत्तर) पाप का फल दूर करने के लिये विधि प्रदिष्ट प्रायश्चित्त करना पड़ता है। उससे जन्मान्तर में पाप का असर नहीं रहता है, न करने पर ७।५।३ जन्म तक उसका असर सन्तान में जाता है, अथवा–अपने को ही भोगना पड़ता है। ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्मांड आदि योनियों में जाकर प्रायश्चित्त न करने वाला जीव उसका भयङ्कर फल भोगता है। इस लिये शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त अवश्य करना चाहिये, यही स्मृतिकारों का निर्णय है।

अघमर्षण सूक्त का जप करे तो पाप से मुक्त हो जाता है। अश्वमेध का भी यही फल है। अघमर्षण सूक्त ऋग्वेद में प्रसिद्ध है।

षष्ठ प्रश्न।

(प्रश्न) वेद में कौन २ सूक्त "अघमर्षण" हैं?

(उत्तर) वेदमात्र अघमर्षण है। ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक इन तीनों के साथ वेदत्रयी का नियम पूर्वक, यथाविधि स्वाध्याय करना 'अघमर्षण' है। यह बात मनु के (११।२६०) पद्य में लिखी है। अब रही सूक्तों की बात (?) उसके लिये मनु में [कौत्स, वासिष्ठ, माहित्र, अस्यवामीय, शिवसंकल्प, हविष्मांतीय, पौरुषीय, तरत्समंदीय, सौमारौद्र, नतमंहीय, ऐन्द्रामैत्र, शाकलहोमीय, पवमान] इन सूक्तों का उल्लेख मिलता है। जिनका वर्णन इसी निबन्ध में अन्यत्र मिलेगा।

सप्तम प्रश्न।

(प्रश्न) गुप्त पापों का क्या प्रायश्चित्त है?

(उत्तर) गुप्त पापों के विषय में—

> एतैर्द्विजातयः शोध्या व्रतैराविष्कृतैनसः।
> अनाविष्कृत पापांस्तु मन्त्रैर्होमैश्च शोधयेत् ॥११।२२६॥
> इत्येतदेनसामुक्तं प्रायश्चित्तं यथाविधि।
> अत ऊर्ध्वं रहस्यानां प्रायश्चित्तं निबोधत ॥२४७॥

मनु ने ऐसा लिखा है। रहस्य शब्द से गुप्त पापों का निर्देश है। जो मनुष्य "अनाविष्कृत पाप" है। अपना पाप

प्रकट नहीं करना चाहते हैं वे [प्राजापत्य, कृच्छ्र सान्तपन अतिकृच्छ्र सान्तपन, तप्तकृच्छ्र, पराककृच्छ्र, चान्द्रायण, यवमध्य चान्द्रायण, यतिचान्द्रायण, शिशु चान्द्रायण] इनमें से किसी एक व्रत का विधि पूर्वक अनुष्ठान करके ऊपर कहे हुये कौत्सादि सूक्तों से हवन करावे। इस प्रकार से उसका रहस्य पाप नष्ट होजाता है।

अष्टम प्रश्न।

(प्रश्न) वैदिक प्रायश्चित्त किनके लिये है।

(उत्तर) जिन द्विजोंका गर्भाधनादि संस्कारोंका विधान है, जिनको यज्ञोपवीत और वेदाध्ययनका अधिकार है, उन्हीं के लिये इन सूक्तोंके अनुष्ठानका भी अधिकार है, शूद्रके लिये नहीं। इसी लिये मनु ने (११ । २२६) पद्य में "द्विजातयः" कहा है। प्रधान रूप से यह प्रायश्चित्त "द्विजोत्तम" ब्राह्मण के लिये ही नियत है। श्रद्धा विश्वास पूर्वक प्रायश्चित्त का अनुष्ठान ब्राह्मण ही कर सकता है। उसका प्रत्यक्ष निदर्शन "कुमारिल भट्ट" है। जिसने अति कठिन 'तुषाग्नि ज्वलन" आनन्द पूर्वक अंगीकार किया। श्रीशंकर के निषेध करने पर भी उसने तुषाग्नि ज्वलन नहीं छोड़ा? ऐसे महानुभाव ब्राह्मणों में ही होते हैं। क्षत्रिय, वैश्यों में कम होते हैं।

नवम प्रश्न।

(प्रश्न) प्रायश्चित्त में अनुकल्प है वा नहीं?

(उत्तर) असमर्थ दशामें अथवा आपत्ति कालमें अनुकल्प

का विधान है। समर्थ दशा में तथा अतिरिक्त समय में नहीं
अनुकल्प से यहाँ पर (११-२७) के पद्य में कही हुई "वैश्वा
नरी-इष्टि" का ग्रहण है। वह भी ब्राह्मण के लिये है, सब
लिये नहीं। ब्राह्मण ही "वैश्वानरी-इष्टि" को कर सकता है
इसी लिये:—

विश्वैश्च देवैः साध्यैश्च ब्राह्मणैश्च महर्षिभिः।
आपत्सु मरणाद्भीतैर्विधेः प्रतिनिधिः कृतः ॥ ११।२९॥
प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते।
न साम्परायिकं तस्य दुर्मतेर्विद्यते फलम् ॥ ३० ॥

मनु ने ऐसा लिखा है। विधि का प्रतिनिधि यहां
वैश्वानरयाग है। संवत्सरान्त में सोमयाग न करने वा
ब्राह्मण नवरात्र में सोमयाग प्रतिनिधि भूत वैश्वानरयाग
सकता है।

दशम प्रश्न।

(प्रश्न) किस २ पाप में क्या प्रायश्चित्त है?

(उत्तर) भिन्न २ पापका भिन्न २ प्रायश्चित्त है धर्मशास्त्र
में पाप की मात्रा देख कर प्रायश्चित्त देने का विधान है। गु
पापों के विषय में पहिले कहा जा चुका है। प्रकाशमें अज्ञान
मोह-वश जो पाप होजाते हैं, उनका प्रायश्चित्त इस प्रकार है

❁ प्रायश्चित्त सूची ❁

[पाप]	[प्रायश्चित]
१ ब्रह्म-हत्या...	१ सपरिच्छद गृहदान

२ सुरापान...	२ आमरण-तप्त गोमूत्र पान
३ सुवर्ण चौर्य...	३ राजा के द्वारा वध
४ गुरु स्त्री गमन ..	४ वृषणच्छेदन
५ गोहत्या...	५ एकवृषभ दस गोदान
६ मांस भक्षण...	६ चान्द्रायण–व्रत
७ सूतकान्न भोजन...	७ आठसहस्र गायत्री-जप(पराशर)
८ अगम्यागमन...	८ [illegible]द्रायण
९ अयाज्य याजन...	९ तीन-बार तप्त कृच्छ्र
१० अपत्य विक्रय...	१० याचक-व्रत (शङ्ख)
११ स्त्री विक्रय...	११ तीन चान्द्रायण (२४ मत)
१२ गणान्न भोजन...	१२ पाँच सहस्र जप (गौतम)
१३ अन्त्यज स्पर्श...	१३ सद्यः सचैलस्नान(पराशर)
१४ भ्रूण हत्या...	१४ तरत्समंदी सूक्त जप
१५ शूद्रान्न भक्षण...	१५ तीन दिन शंख पुष्पी पान
१६ मिथ्या भाषण...	१६ अहोरात्रोपवास

इसी प्रकार अन्य पापोंका भी प्रायश्चित है। धर्मशास्त्रों में वह देखना चाहिये। निबन्ध के विस्तार-भय से यहां पर नहीं लिखते हैं।

निबन्ध का शुद्धि विभाग।

प्रथम प्रश्न।

(प्रश्न) शुद्धि के क्या २ साधन हैं?

(उत्तर) इस विषय में मनुजी—

ज्ञानं तपोग्निराहारो मृन्मयो वार्युपाञ्जनम्।
वायुः कर्मार्ककालौ च शुद्धेः कर्तृणि देहिनाम् ॥५ १०५॥

ऐसा कहते हैं। ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है, तप से मल शुद्ध होता है। अग्नि से मृण्मयपात्र, शुद्धाहार से मन, मृत्तिका से आशौच, स्वच्छ मन से अर्थ, उपाञ्जन (लेपन) से गृह, जल से शरीर, वायु से कुत्ते का स्पर्श दोष, अच्छे कर्म से हृदय, सूर्य्य से अन्त्यज दर्शन, काल से सूतक शुद्ध होता है। इसका विस्तार [विष्णु स्मृति] में देखना चाहिये।

द्वितीय प्रश्न।

(प्रश्न) पतित को क्या करना चाहिये?

(उत्तर) इस प्रश्न का उत्तर मनुजी—

अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्कृत्वा कर्म विगर्हितम्।
तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन्द्वितीयं न समाचारेत् ॥११।२३२
ख्यापनेनानुतापेन तपसाध्ययनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात्तथा दानेन चापदि ॥ २२७ ॥

इन पद्यों द्वारा देते हैं। ज्ञान से अथवा अज्ञान से, पाप कर्म करके उस पाप से छुटने की इच्छा रखने वाला पुरुष

दूसरा पाप कर्म कदापि न करे। पाप कर्म के ख्यापन से, पश्चात्ताप से, तप से, स्वाध्याय से, (आपत्ति कालमें) दान से, पापी का पाप कम हो जाता है, जब तक पतित अपना प्रायश्चित्त न करे, तबतक उत्तमजनों से अलग रहे। (११।४७) इस प्रकारके व्यवहार से उसका मन पाप कर्म से हट जाता है। जो मनुष्य पाप करने पर पश्चात्ताप नहीं करते हैं, उनको प्रायश्चित्तका फल नहीं होता है।

तृतीय प्रश्न।

(प्रश्न) जन्म का यवन शुद्ध हो सकता है, या नहीं ?

(उत्तर) जन्मसे पतितका धर्मशास्त्रों में कोई प्रायश्चित्त नहीं है। यवन, चाण्डाल, श्वपच आदि अन्त्यज जन्मतः पतित हैं, उनकी इस जन्म में शुद्धि नहीं हो सकती है। जिन के शरीर में रजवीर्य गत अपवित्रता है, उनका जन्मान्तर में जाति परिवर्तन होता है। इस जन्म में नहीं। गोमांस-भक्षण से परम्पराऽऽगत, जिस वंश में अपवित्रता स्थान प्राप्त कर चुकी हो, उसका पवित्रीकरण कैसा ? यवन "गो-घातक" है। यह बात वेद से सिद्ध होचुकी है। वैदिक कालसे यवनों का अस्तित्व विद्यमान है। उनकी लिपि "यवनानी" कहाती है। "गोविकृन्तन" और "गोघात" इनका कुल परम्परागत कर्म है। काल यवन कृष्ण के समय में था (?) इसको पांच सहस्र वर्ष से अधिक समय हो गया।

चतुर्थ प्रश्न ।

(प्रश्न) बलात्कार से हुआ यवन, कब तक शुद्ध हो सकता है।

(उत्तर) इसका उत्तर देवल स्मृति में—

गृहीतो यो बलान्म्लेच्छैः पञ्च षट् सप्त वा समाः।

दशादि विंशतिं यावत्तस्य शुद्धिर्विधीयते ॥ ५३ ॥

अतः परं नास्ति शुद्धिर्यम्लेच्छैः सहोषिता ॥५४॥

इस प्रकार दिया है। बलपूर्वक जिनको यवनोंने अपवित्र कर दिया हो उनका पांच, छः, सात, (अथवा) दस से ले कर बीसके भीतर प्रायश्चित्त हो सकता है इसके बाद नहीं। यह अन्तिम अवधि है। प्रायश्चित्त एक वर्ष के भीतर करना चाहिये चार वर्षके बाद तत्सादृश्य हो जाता है।

पञ्चम प्रश्न ।

(प्रश्न) यवनों के राज्य में जो बल से हिंदू यवन होगये हैं, उनकी पुनरावृत्ति अब हो सकती है या नहीं?

(उत्तर) यवनों के राज्य को गये हुये १०० से अधिक वर्ष हो गये हैं, तबसे अब तक ये यवनही क्यों रहे? वास्तव में इनके हृदय में ग्लानि नहीं है। धन के लोभ से स्त्री के लालच से बहुत से हिन्दू अब भी विधर्मी हो जाते हैं। ऐसों की शुद्धि धर्मशास्त्र में कहीं नहीं लिखी है, जो वास्तव में हिन्दू थे? जिनको अपने धर्म का अभिमान था, वह यवन राज्य में भी यवन न हुये, प्राण दे दिया। गुरु गोविन्दसिंह

के दो पुत्र इसके प्रत्यक्ष निदर्शन है। हकीकतराय का देदीप्यमान इतिहास अब भी भारत में विख्यात है। इस प्रकार के अनेक महानुभाव हिन्दू समाज का गौरव बढ़ा रहे हैं, जिस समय में ये लोग विद्यमान थे, उस समय भी यवनं शासन ही था? फिर ये क्यों न यवन हुये? इस लिये इस प्रकार के श्रद्धाभक्ति शून्य यवन धर्म में परिवर्तित हिन्दू प्रायश्चित्त से शुद्ध नहीं हो सकते हैं।

षष्ठ प्रश्न।

(प्रश्न) जो जन्म से यवन अथवा ईसाई हिन्दू धर्म पर श्रद्धा रख कर अपने मत में अश्रद्धा रखता है, उसका क्या प्रायश्चित्त होना चाहिये?

(उत्तर) इस प्रकार के मनुष्य हिन्दू धर्म का अनुकरण करके स्वयं भगवद्भक्ति में अनुरक्त हो जाते हैं, उनका प्रायश्चित्त नहीं है। यावज्जीवन वे हिन्दू समाज से पृथक् रह कर भी अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जन्मान्तरमें उनका स्वयं प्रायश्चित्त हो जाता है। ऐसे सज्जन अपना प्रायश्चित्त कराना ही नहीं चाहते हैं, हिन्दू धर्म की मर्यादा समझ कर वे स्वयं अलग रहते हैं, इस प्रकार के कई अंग्रेज अब भी विद्यमान् हैं।

सप्तम प्रश्न।

(प्रश्न) लालच देकर हिन्दू बनाना उचित है, वा नहीं?

(उत्तर) कदापि नहीं। धन के लोभ से, स्त्री के लोभ से कई यवन आर्यसमाज में शुद्ध होकर हिन्दू समाज में प्रविष्ट हुये, परन्तु स्वार्थ सिद्ध न होने पर वे फिर यवन हो गये। धर्मपाल, सत्यदेव आदि कई इसके उदाहरण हैं। धर्मपाल "सुनीति" से विवाह करने के लिये यवन से हिन्दू हुआ था। सत्यदेव काशी में एक ब्राह्मणी के साथ १८ वर्ष रह कर अन्त में दो पुत्रो और ब्राह्मणी के साथ फिर यवन होगया, एक यवन एक प्रसिद्ध नेता की पुत्री लेकर चौरा-चौरी से अमृतसर तक भाग गया था, अन्त में वह पकड़ा गया। जब यहां तक यवनों का अत्याचार हिन्दुओं के साथ बढ़ रहा है, तब इनको शुद्ध करके कौनसा विश्वविजय प्राप्त होगा।

अष्टम प्रश्न।

(प्रश्न) यवनों के साथ में हम को कैसा व्यवहार करना चाहिये?

(उत्तर) कैसा भी नहीं, इनसे किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखना चाहिये। प्रत्येक बात में इनसे पृथक् रहना चाहिये, इनके हाथ का फल-फूल-वस्त्र आदि कुछ नहीं लेना चाहिये। इनके सम्पर्क से हम हर बात में अपवित्र हो जाते हैं ये हिन्दुओंके प्राणान्तक असुर हैं, जो हिन्दू सूद पर इनको रुपया देकर उनका सहयोग रखते हैं, वे हिन्दू-हिन्दू नहीं हैं, हिन्दु जाति के कुठार हैं, जो देश नेता आज कल इनके साथ

में बैठ कर इनके हाथ का बना हुआ भोजन करते हैं, वह वास्तव में हिन्दू नहीं है। उनके अन्दर साङ्कर्य दोष का आक्रमण पूर्ण रूप से हो गया है।

नवम प्रश्न।

(प्रश्न) रामानन्द ने मिश्रदेश में जाकर यवनों को वैष्णव बनाया, यह बात आप मानते हैं या नहीं?

(उत्तर) यह बात किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ में नहीं है, और जिनमें लिखी है, वह ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है। भविष्य पुराण में प्रक्षिप्तांश बहुत है, उसके मानने के लिये हम बाध्य नहीं है। पहिले तो ब्राह्मणों के लिये उस देश में जाना ही वर्जित है, यदि कोई महात्मा साधु अपने तपोबल से अथवा विशेष सामर्थ्य से यवनों की रुचि अपने आचरणों द्वारा बदल दें, तो सबके लिये यह बात सुकर नहीं। इस लिये हम इस घटना को सत्य नहीं मानते हैं। वेश्या सती, काक हँस जिस प्रकार होना असम्भव है, इसी प्रकार यवन का वैष्णव होना भी माया मारीचवत् किसी प्रयोजन वश ही हो सकता है, श्रद्धा और विश्वास से नहीं।

दशम प्रश्न।

(प्रश्न) वर्तमान समय में हम यवनों से बच सकते हैं, या नहीं?

(उत्तर) बच सकते हैं। यदि मन में आचार विचारके लिये स्थान हो? जो मनुष्य स्वयं आचार भ्रष्ट है, वह क्या

बचेंगे? बचने वाले अब भी लक्षों मनुष्य हैं, जो इनके साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखते हैं। इसके लिये हृदयमें पवित्रताका भाव होना चाहिये, ग्लानि उत्पन्न होनी चाहिये, अपना संस्कार शुद्ध होना चाहिये। पवित्र अन्न, पवित्र जल, पवित्र देश का रहन-सहन होना चाहिये। पवित्रता पर ध्यान रखने वाला मनुष्य-यवनों से क्या किसी भी अन्त्यज-अस्पृश्य-अव्यवहार्य नीच पतित से नहीं मिल सकता है। न बचने वाला सैकड़ों बहाने बना कर इनसे सम्पर्क रखता ही है। इसके लिये कोई कुछ नहीं कर सकता है। आसुरी प्रकृति वाले असुरों से सम्बन्ध रखते हैं। दैवी प्रकृति वाले असुरों से बचते हैं। यह प्रकृतिका अनादि काल सिद्ध नियम है। बहुतसे असुर आजकल भी यवनों के हाथ से कटा हुआ तरबूज खाते हैं। बहुतसे किन्नर इनसे हजामत बनवाते हैं। बहुत से इनको ही घर में नौकर रखते हैं इनको कौन इस कामके लिये प्रेरणा करता है। आसुरी प्रकृति स्वयं इनको इस ओर झुकाती है। इसी कारण भारत में इनका व्यवसाय बढ़ रहा है यदि हिन्दू जाति एक वर्ष तक इनके साथ में सम्बन्ध विच्छेद करदे तो इन यवनों का भारत में इतना आतंक न रहे। यह कार्य एक न एक दिन अवश्य करना होगा। परन्तु होगा तब? जब हिन्दुओं को ईश्वर सुबुद्धि देगा! अभी इसमें विलम्ब है।

——❀——

देश का अधःपतन ।

सन् १९२१ से लेकर अब तक का हमारा अनुभव साक्षी है कि दिन प्रति दिन भारत का नैतिक अधःपतन हो रहा है। इसका कारण, देश में पवित्र नेता का अभाव है। स्वर्गीय बालगंगाधर तिलक के बाद अब तक कोई देश का पवित्र नेता भारत में उत्पन्न नहीं हुआ है। इस समय भारत का कोई धार्मिक नेता नहीं है। सब स्वार्थ लोलुप असत्यवादी अप्रतिष्ठ व्यर्थ में लीडरी का दम भरने वाले भिक्षुक लोग, इस समय अपनी अपनी डफली बजारहे हैं। सच्चा देश-प्रेमी इनमें एक भी नहीं है।

भारतका एक करोड़ वर्बाद हुआ ।

स्वर्गीय बालगंगाधर तिलक के नाम पर भारत ने एक करोड़ रुपया एक दिन में एकत्र किया था। उसका वर्तमान लीडरों ने ऐसा दुरुपयोग किया, जिसका कुछ हिसाब नहीं है। किसी की दुकान बनी, किसी का बैङ्क खुला, किसी ने मोटरें चला लीं (?) बस, एक करोड़ हजम हो गया। यदि इस रुपये से दस कारखाने, दस २ लाख लगाकर खोल दिये जाते तो देश का आज दिवाला न निकलता। देश का पैसा देश की उन्नति का साधक होता। अब वजाय साधक के वह बाधक हो गया। यही इन लीडरों का "नग्न-चित्र" है।

देश के नेता, देश के शत्रु हैं।

सन् १६२१ में जब "जर्मनवार" का समय था। रशिया हमारी सरकार के विरुद्ध था, उस पर हमारी बहादुर सरकारने "क्रूजरों" की चढ़ाई बोल दी। उस समय भारत के मुसलमान, गवर्नमेन्टके खिलाफ रशिया को मदद देना चाहते थे। गवर्वनमेन्ट ने वह रोक दी। इस पर गवर्नमेन्ट में और मुसलमानों में मनमुटाव हो गया था। वह समय अपने अभ्युदयका था, परन्तु वर्तमान अदूरदर्शी नेताओं ने स्वराज के लोभ से, उस समय मुसलमानों की मदद की। उसका परिणाम यवन आज दे रहे हैं। हिन्दुओं की उन्नति का मार्ग सर्वथा बन्द है।

अब "अल्प संख्यक मत रक्षण" का प्रश्न सामने आया है. पहिले नहीं था। इस प्रश्न के सामने आने से सरकार को हिन्दुओं के मुकाबिले पर यवनों का पक्ष लेना पड़ा है। राजनीति सर्वदा एकसी नहीं रहती है। गवर्नमेन्ट की जो कृपा-दृष्टि यवनोंकी तरफ झुकी हुई है, इसका प्रधान कारण कतिपय देशोन्नति-बाधक वर्तमान लीडर हैं!

बलवान से विरोध कैसा?

जिस पत्तल में खाना, उसीमें छेद करना? यह मूर्खता नहीं तो और क्या है? जिसके राज्य में रहना उसीसे द्रोह

... चल सकती है। दांतों से जीभ
...ना ? यह बात कब तक चल सकती है। दांतों से जीभ
... लड़ना कैसा ? गर्भस्थ शिशुका सिंहगर्जन कैसा ? अतुल
...क्रमी, धीर, वीर, गम्भीर, प्रबल प्रताप, वृटिश-सिंह के
...मक्ष कतिपय शालावृक क्या अस्तित्व रखते हैं ! जिसने
...त की बात में जर्मन जैसे प्रबल शत्रु को नष्ट कर दिया।
...सके सामने सनातनधर्म द्रेषी, वर्तमान कतिपय, कांग्रेसी
...ोडर क्या करसकते हैं। उनसे बिरोध करने पर अपने देश
... ही अधःपतन हुआ। गवर्नमेन्ट का बाल बांका न हुआ ;
...र न अब हो सकता है। अपने देश को जो लाभ होना था
... पर पानी फिर गया, अब दरिद्रनाराण की जै बोलते
...। यही कार्य बाकी रह गया है। बाकी जो कुछ स्वराज्य
...लेना था, वह तो मिल गया ?

———❀———

बलवान् नीति से काम लेता है।

राजनीति गुप्त होने पर भी बद्धमूल होने के कारण बल-
...वान् होती है। कूटनीति, कौटसाक्ष्य राजाओं का प्रधान
...अत्र होता है, स्वनाम धन्य लार्ड हार्डिङ्ग का नाम भारत
में प्रसिद्ध है। "सरजेम्स-मेष्टन" की लोक प्रियता, सर्वत्र
अभी तक गाई जारही है, भारत की दुर्भाग्य भूमिका का
उपक्रम भारत में तब से हुआ, जब से हार्डिङ्ग-पर देहली
में अत्याचार होना आरम्भ हुआ। उस समय अंग्रेजों की
गंभीरता और नीति कुशलता का प्रमाण जनता को पर्याप्त

रूप में मिल चुका था। यवनशासन में यदि यह दुर्घटना हुई होती तो भारत में से हिन्दुओं का नाम तक मिट गया होता (?) परन्तु यहां इससे विपरीत हुआ, एक भी हिन्दू नहीं मारा गया, सब काम शान्ति से समाप्त हुआ। सेनाध्यक्ष की म्यान से निकली हुई "किर्च" हार्डिङ्ग महोदय की दूरदर्शिता के कारण म्यान में ही चली गई, लोग दङ्ग रह गये। इस प्रकार के शांति समय में भी देश-द्रोहियों ने अपनी जघन्यता का परिचय दे ही दिया। उस पाप का फल भारत को अब भोगना पड़ा है, जर्मनवार में अंग्रेजों का साथ भारत ने केवल हार्डिङ्ग की नीति कुशलता से ही दिया। अन्त में जर्मन परास्त हुआ, और भारत के विजयी वीर योद्धाओं का सर्वत्र सिक्का जम गया। उस पुण्य कार्य का फल जब भारत को मिलने का समय आया, तब कोढ़ में खाज, गांधी महा-तमाओं ने उत्पन्न करदी। इसका फल अब प्रत्यक्ष है। हिन्दुओं के लिये भारत सरकार के सब दरवाजे बन्द हैं, हिन्दू जाति के विपक्षी यवन इस समय से "नाजायज" फायदा उठा रहे हैं। भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है कि (विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः)

——❀——

भारत का सुवर्ण समय।

भारत का सुवर्ण समय निकल गया, सुवर्ण निकल रहा है। दरिद्रनारायण की "झोली" भीख मांगने पर उतारू है।

दो अमूल्य रत्न ।

श्री सनातनधर्म विजय महाकाव्य ।

इस ग्रन्थ के विषय में यहां अधिक लिख सकना असम्भव है ६०० पृष्ठ का पोथा है । इसमें २० सर्ग हैं २५०० के करीब श्लोक हैं और प्रत्येक श्लोक की विशुद्ध हिन्दी में टीका है । १-१ सर्ग में अनेक विषयों की आलोचना है यदि पूरी विषयसूची दीजावे तो ८-७ पेजमें विषयसूची ही आवे, सनातनधर्मका छोटे से छोटा विषय भी इसमें रहने नहीं पाया है । सनातनधर्म के एक२ मन्तव्य की आलोचना की गई है। सनातनधर्म क्या वस्तु है यदि आप यह जानना चाहते है तो इसे एक वार आदि से अन्त तक अवश्य पढ़िये, पुस्तक बड़े बड़े कालेजों में धर्म-शिक्षा में रखने लायक है सचमुच इस पुस्तक के लिखने में असीम परिश्रम किया गया है, पुस्तकालयों में रखने योग्य पुस्तक है, पुस्तक की छपाई सफाई देख कर चित्त प्रसन्न हो जाता है । मूल्य ४)

सत्यार्थप्रकाशालोचन ।

स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को कौन नहीं जानता और उसमें अनेकों अश्लील और गन्दी बातें भरी पड़ी हैं, यह भी प्रत्येक मनुष्य को पता है इस पुस्तक में उन्हीं बातों की बड़ी कड़ी आलोचना की गई है इस पुस्तक का खंडन आज तक आर्यसमाजी नहीं कर सके इसमें सत्यार्थप्रकाशका समस्त इतिहास, दयानन्द की चालवाजियां, प्रत्येक संस्करण में इसका परिवर्तन, पूर्वापर विरोध इन सबका विवेचन करते हुये सत्यार्थप्रकाशकी धज्जियां इसमें खूब उड़ाई गई हैं, मूल्य १)

पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न,

मु० पो० अनूपशहर, जिला बुलन्दशहर ।